# ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, कृषि मौसम विभाग
# जलवायु परिवर्तन पर उच्च अध्ययन केन्द्र
# डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
# पूसा,समस्तीपुर (बिहार)–848125


**बुलेटिन संख्या–84**
**दिनांक– शुक्रवार, 14 नवम्बर, 2025**

## विगत मौसम पूर्वानुमान अवधि का आकलन

मौसमीय वेधशाला पूसा के आकलन के अनुसार पिछले तीन दिनों का औसत अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान क्रमशः 27.9 एवं 12.5 डिग्री सेल्सियस रहा। औसत सापेक्ष आर्द्रता 94.0 प्रतिशत सुबह में एवं दोपहर में 51.0 प्रतिशत, हवा की औसत गति 7.4 कि0मी0 प्रति घंटा एवं दैनिक वाष्पन 2.2 मि0मी0 तथा सूर्य प्रकाश अवधि औसतन 7.4 घन्टा प्रति दिन रिकार्ड किया गया तथा 5 से0मी0 की गहराई पर भूमि का औसत तापमान सुबह में 18.6 एवं दोपहर में 27.0 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। इस अवधि में मौसम शुष्क रहा।

## मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
## (15–19 नवम्बर, 2025)

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी 15–19 नवम्बर, 2025 तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः–

- पूर्वानुमान की अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में आसमान प्रायः साफ तथा मौसम क शुष्क रहने का अनुमान है।
- इस अवधि में अधिकतम तापमान 25–27 डिग्री सेल्सियस के बीच रह सकता है। न्यूनतम तापमान, सामान्य तापमान से 3–5 डिग्री सेल्सियस कम रह सकता है और इसके 13–15 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने की सम्भावना है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 85 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 70 प्रतिशत रहने की संभावना है।
- पूर्वानुमानित अवधि में धीमी गति से पछिया हवा चलने की संभावना है।

## • समसामयिक सुझाव

- गेंहुं की बुआई के लिए तापमान तथा अन्य मौसमीय परिस्थितियाँ अनुकूल है। किसान भाई सिंचित एवं समयकालीन गेहुँ की किस्मों की बुआई प्राथमिकता से करें। खेत की तैयारी के समय 150–200 क्विटल कम्पोस्ट, 60 किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम फॉसफोरस एवं 40 किलोग्राम पोटास प्रति हेक्टेयर की दर से व्यवहार करें। बुआई हेतु एच० डी० –2967, एच० डी० –2733, एच० डी० –2824, डी० डब्लू० 187, डी० डब्लू० 39, एच० यु० डब्लू० 468, सी० बी० डब्लू० 38 किस्में उत्तर बिहार के लिए अनुशंसित है। बीज को बुबाई से पहले 2.5 ग्राम बेबीस्टीन की दर से प्रति किलोग्राम बीज को उपचारित करें। छिटकबाँ विधि से बुआई के लिए प्रति हेक्टेयर 125 किलोग्राम तथा सीड ड्रील से पंक्ति में बुआई के लिए 100 किलोग्राम बीज का व्यवहार करें।
- चना की बुआई के लिए मौसम अनुकूल है। बुआई के समय 20 किलोग्राम नेत्रजन, 45 किलोग्राम फॉसफोरस, 20 किलोग्राम पोटास एवं 20 किलोग्राम सल्फर प्रति हेक्टेयर की दर से व्यवहार करें। चना के लिए उन्नत किस्म पूसा–256, के0पी0जी0–59(उदय) एवं पूसा 372 अनुशंसित हैं। बीज को बेबीस्टीन 2.5 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित करें। 24 घंटा बाद उपचारित बीज को कजरा पिल्लू से बचाव हेतु क्लोरपाईरीफॉस 8 मि0ली0 प्रति किलोग्राम की दर से मिलावें। पुनः 4 से 5 घंटे छाया में रखने के बाद राईजोबीयम कल्चर (पॉच पैकेट प्रति हेक्टेयर) से उपचारित कर बुआई करें।
- आलू की रोपाई प्राथमिकता से करें। कुफरी चन्द्रमुखी, कुफरी अशोका, कुफरी बादशाह, कुफरी ज्योति, कुफरी सिंदुरी, कुफरी अरुण, राजेन्द्र आलू– 1, राजेन्द्र आलू– 2 तथा राजेन्द्र आलू–3 इस क्षेत्र के लिए अनुशंसित किस्में है। बीज दर 20–25 क्विंटल प्रति हेक्टेयर रखे। पंक्ति से पक्ति की दुरी 50–60 से0मी0 एवं बीज से बीज की दूरी 15–20 से0मी0 रखें। आलू को काट कर लगाने पर 2 से 3 स्वस्थ ऑख वाले टुकडे को उपचारित कर 24 घंटे के अन्दर लगावे। बीज को एगलॉल या एमीसान के 0.5 प्रतिषत घोल या डाइथेन एम0 45 के 0.2 प्रतिशत घोल में 10 मिनट तक उपचारित कर छाया में सुखाकर रोपनी करे। समूचा आलू (20–40 ग्राम) लगाना श्रेष्ठकर है। खेत की जुताई में कम्पोस्ट 200–250 क्विटल, 75 किलोग्रम नेत्रजन, 90 किलोग्रम फास्फोरस एवं 100 किलोग्रम पोटाश प्रति हेक्टर की दर से प्रयोग करें।
- पिछेती धान की कटाई कर राई की पिछेती किस्में राजेन्द्र अनुकूल, राजेन्द्र सुफलाम एवं राजेन्द्र राई पिछेती की बुआई कर सकते है। राई–तोरी–सरसों की फसल जो 15 से 20 दिनों की हो गयी है उसमें निकोनी तथा बछनी कर पौघे से पौघे की दूरी 12–15 से0मी0 रखें।
- मक्का, मटर, मसूर एवं राजमा की 20 से 25 दिनों की फसलों में कजरा (कटुआ) पिल्लू की निगरानी करें। इस कीट के पिल्लू रात्री के समय निकलकर इन फसलों के छोटे–छोटे उग रहे पौधो पर चढ़कर पत्तियों तथा कोमल शाखाओं को काटकर खाती है एवं जमीन पर गिरा देती हैं जिससे पूरा पौधा ही सूख जाता है। यह पिल्लू अधिकतर दिन में भूमि के अन्दर दरारों में या ढ़ेलों के नीचे छिपी रहती है और इन कटी शाखाओं को जमीन के अन्दर ले जा कर दिन में भी खाती है। यह खाती कम नुकसान अधिक करती है। इसकी रोकथाम के लिए खेत की सिंचाई करने पर इसके पिल्लू दरार से बाहर निकलते हैं एवं पक्षियों द्वारा शिकार हो जातें हैं। खड़ी फसलों में बीच–बीच में घास–फूस के छोटे–छोटे ढ़ेर शाम के समय लगा देते हैं। रात्री में यह कीट फसलों को खाकर इसी ढ़ेर में छिप जाती है। किसान सुबह में छिपे पिल्लू को चुनकर नष्ट कर देतें है। अधिक नुकसान होने पर क्लोरपायरीफॉस 20 ई0सी0 दवा का 2.5 मि0ली0 प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करे।
- विगत माह बोयी गई मटर, राजमा, लहसून एवं सब्जियों वाली फसलें– बैगन, टमाटर, मिर्च, पत्तागोभी एवं फूलगोभी में निकाई गुराई तथा आवश्यकतानुसार सिंचाई करें। कजरा (कटुआ) पिल्लू से मक्का, मटर, मसूर एवं राजमा की फसलों की निगरानी करें। अधिक नुकसान होने पर क्लोरपायरीफॉस 20 ई0सी0 दवा का 2.5 मि0ली0 प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करे।
- बैगन की फसल को तना एवं फल छेदक कीट से बचाव हेतु ग्रसित तना एवं फलो को इकठा कर नष्ट कर दें, यदि कीट की संख्या अधिक हो तो स्पिनोसेड 48 इ0सी0/1 मि0ली0 प्रति 4 ली0 पानी की दर से छिड़काव करे।

| | |
|---|---|
| आज का अधिकतम तापमानः 28.2 डिग्री सेल्सियस,<br>सामान्य से 1.2 डिग्री सेल्सियस कम | आज का न्यूनतम तापमानः 12.4 डग्री सेल्सियस,<br>सामान्य से 3.9 डिग्री सेल्सियस कम |

**(डॉ0 ए. सत्तार)**
**नोडल पदाधिकारी**